ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 164-167
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-9, No.-II, Issues-10 YEAR- Dec -2018

# स्वामी विवेकानंद का जीवन दर्शन और दार्शनिक एवं शैक्षिक विचार

**डॉ0 लोकेश यादव**

असिस्टेण्ट प्रोफेसर– एम0एड0 विभाग, ए0के0कालेज, शिकोहाबाद, फिरोजाबाद, (उ0प्र0) भारत

Received- 20.11.2018, Revised- 24.11.2018, Accepted - 27.11.2018 E-mail: lokeshkb@rediffmail.com

***सारांश :*** *स्वामी विवेकानंद का जन्म 12 जनवरी सन 1863 ई. को कोलकाता में हुआ था। उनके बचपन का नाम नरेन्द्रनाथ दत्त था। उनके पिता श्री विश्वनाथ दत्त जी कोलकाता हाईकोर्ट के वकील थे। उनकी माँ भुवनेश्वरी देवी उन्हें रामायण, महाभारत, पुराण आदि धार्मिक ग्रन्थों को पढाया करती थी, ये बहुमुखी प्रतिभा के व्यक्ति थे पश्चिम के स्टुअर्ट मिल और हरवर्ट के दार्शनिक विचारों का इन्होंने गंभीर अध्ययन किया। जब स्वामी जी अपने कॉलेज प्राचार्य के पास पहुँचे। उन्हें देखते ही रामकृष्ण ने उनकी आध्यात्मिक शक्तियों को पहचान लिया और कहा कि देव में जानता हूँ कि तुम वह प्राचीन ऋषिवर हो नारायण के अवतार, जोकि पृथ्वी पर मानव दुःखों को दूर करने के लिए जन्म लेता है।*

*उनके इस व्यवहार को देखकर स्वामी जी को आश्चर्य हुआ और उन्होंने प्रश्न किया –*

*"श्रीमान क्या आपने ईश्वर को देखा है श्री रामकृष्ण ने कहा हाँ में उन्हें वैसे ही देखता हूँ जैसे तुम्हें यहाँ देखता हूँ।"*

***कुंजीभूत शब्द–रामायण, महाभारत, पुराण, धार्मिक ग्रन्थ, बहुमुखी प्रतिभा, दार्शनिक विचार, अखंडता।***

इसका उन पर गहरा प्रभाव पडा और वे उनके शिष्य हो गये। सन 1888 ई. में स्वामी जी विना किसी साथी के अकेले ही कलकत्ता छोडकर वाराणसी, लखनऊ, आगरा, वृन्दावन और हाथरस होते हुए हिमालय पहुँचे। इससे उन्हें हिमालय में भारत की आत्मा के दर्शन हुए। फरवरी 1891 में देश की यात्रा पर निकले और रामेश्वरम तक पहुँचे, कन्याकुमारी में उन्होंने एक चट्टान पर बैठकर भारत की ओर मुख करके समाधि लगाई, जिससे उन्हें देश की अखण्डता का आभास हुआ। सन 1893 ई. में संयुक्त राज्य अमेरिका में विश्व धर्म संसद में हिस्सा लेने गये। क्योकि वे अपने विचारों को सारे संसार में फैलाना चाहते थे। अमेरिका जाने से पूर्व वे खेतडी गये, जहाँ के महाराजा उनके शिष्य थे इन्हीं महाराजा ने उन्हें स्वामी विवेकानंद नाम ग्रहण करने का सुझाव दिय। जोकि उन्हें जॅच गया । और इसके बाद वे समस्त संसार में इसी नाम से प्रसिद्व हुए। 31 मई 1893 को स्वामी जी अमेरिका पहुँचे, वे लंका, सिंगापुर, कैटन और नागासाकी होते हुए गये और यहाँ पर भारतीय संस्कृति और संस्कृत भाषा को देखकर उन्हें विश्वास हुआ कि एशिया में आध्यात्मिक एकता है।

11 सितम्बर 1893 ई. को शिकागो के कोलम्बस हॉल की विश्व धर्म संसद में भाग लिया। स्वामी जी ने जैसे ही अमेरिका के भाइयो और बहनों! शब्द कहे, सैकडों लोगों ने करतल ध्वनि से उसका स्वागत किया, बाद में 7 अगस्त 1895 ई0 को इंग्लैण्ड पहुँचे, यही पर उनकी कुमारी भारग्रेटई नोबेल से भेंट हुई, जो बाद में सिस्टर निवेदिता के नाम से प्रसिद्व हुई।

अप्रैल 1896 ई. में स्वामी जी पुनः अमेरिका से इग्लैण्ड पहुँचे और वहाँ पर वेदान्त का अध्यापन आरम्भ किया और प्रिंसेज हॉल, ऐनीवेसेन्ट लॉज तथा अन्य अनेक क्लवों और शिक्षा संस्थाओं में बोले। इसके बाद पुनः भारत आकर 5 मई 1897 को रामकृष्ण मिशन की स्थापना की। देश में विभिन्न यात्राओं के बाद वे बौद्व गया से वाराणसी पहुँचे और वहाँ रामकृष्ण मिशन सेवा गृह की स्थापना की। इस यात्रा से उनका स्वास्थ्य गिर गया। वे वहुधा कहा करते थे कि "मैं चालीस वर्ष देखने के लिए जीवित नहीं रहूँगा।"

पाश्चात्य देशों में अविराम भ्रमण तथा भाषण से स्वामी जी का स्वास्थ्य गिरत चला गया और 1902 ई 4 जुलाई को उन्होंने देह त्याग किया। संध्या की बेला में मठ स्थित अपने कक्ष में वह ध्यानरत थे। रात्रि 9 बजकर 10 मिनट पर वह ध्यान, महासमाधि में बदल गया। उस समय उनकी आयु 39 वर्ष 5 माह तथा 24 दिन थी। परंतु स्थूल शरीर का नाश होने पर भी जिस शक्ति के रूप में स्वामी विवेकानंद उभरे, वह अभी भी कियाशील है। स्वामी जी ने स्वंम कहा भी था– "शरीर को पुराने वस्त्र की भॉति त्यागकर, इसके बाहर चले जाना ही में श्रेष्ठ मानता हूँ परंतु में काम में कभी भी विरत नहीं होऊँगा। "मैं तब तक मानव को अनुप्रेरित करता रहूँगा जबतक प्रत्येक मनुष्य यह नही समझता कि वह भगवान है।

**स्वामी जी द्वारा स्थापित संस्थाऐं –** अ.

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-9, No.-II, Issues-10 YEAR- Dec -2018

रामकृष्ण मिशन ब.–मायाबती अद्वैत आश्रम

**प्रकाशित कार्य–** स्वामी जी निपुल उनकी जन्म शताब्दी के अवशर पर दस खण्डों में सन 1963 को प्रकाशित हुआ। ये निम्नलिखित हैं ।

1. ज्ञान योग 2. राजयोग 3. प्रेमयोग 4. कर्मयोग 5. भक्ति योग 6. ज्ञान योग प्रवचन 7. सरल राजयोग 8. धर्मतत्व 9. धर्म–विज्ञान 10. धर्म–रहस्य 11. हिन्दू धर्म 12. हिन्दू धर्म के पक्ष में 13. शिकागो वकतता 14. मरवोन्तर जीवन 15. भगवान श्री कृष्ण और भगवद् गीता 16. देववाणी 17. कवितावली 18. वेदान्त 19. व्यावहारिक जीवन में वेदान्त, 20. आत्मतत्व, 21. आत्मानुभूति 22. विवेकानंद जी के संग में 23. स्वामी जी से वार्तालाप 24. विवेकानंद जी के सानिध्य में 25. पलावली 26. भारत में विवेकानंद 27. विवेकानंद संचयन।

स्वामी जी द्वारा रचित साहित्य अध्ययन के विषय में रविन्द्रनाथ टैगोर ने कहा कि – "यदि आप भारत को समझना चाहते हो तो विवेकानंद का अध्ययन कीजिए। उनमें सब सकारात्मक है, नकारात्मक कुछ भी नहीं है।"

**दार्शनिक विचार–** स्वामी विवेकानंद के दार्शनिक विचार भारतीय दर्शन की बेदानत शाखा से प्रेरित हैं उनके अनुसार–आत्मा शाश्वत और सर्वव्यापी है। सम्पूर्ण विश्व में एक चेतन सत्ता प्याप्त है विश्व में केवल आत्मत्व है। हम सव उसकी अभिव्यक्ति हैं। मनुष्य की आत्मा न कभी मरती है , न कभी जन्म लेती है शरीन नश्वर है, आत्मा अमर है, ज्ञान, भक्ति, योग और कर्म ये चार मार्ग मुक्ति की ओर ले जाते हैं अपनी योग्यता के अनुसार हर व्यक्ति को ज्ञान के मार्ग का अनुसरण करना चाहिए। विवेकानंद जी का कहना था – "नीर बनो, हमेशा कहो, मैं निर्भय हूँ सव से कहो डरो मत भय मृत्यु है भय पाप है, भय नर्क है भय का जीवन में कोई स्थान नहीं है।"

स्वामी विवेकानंद दर्शनों के प्रति उदार दृष्टिकोण रखते थे लेकिन अद्वैत दर्शन को सर्वश्रेष्ट मानते थे। उनके विचार निम्न प्राकर है –

**धार्मिक दर्शन–** विवेकानंद जी धार्मिक दर्शन को शिक्षा का प्रमुख उददेष्य मानते थे। वे चाहते थे कि प्रत्येक व्यक्ति उस सत्य अथवा धर्म को ज्ञात कर सके, जो उसके अन्दर छिपा है।

**ब्रह्म और ईश्वर–** वेदान्त के अनुसार ब्रह्म ही सब कुछ है। वही इस सृष्टि का निमिन्त एवं उपादन कारण है, वेदान्त को एक उदाहरण के द्वारा समझाते है कि लिस प्रकार एक मकडी अपने जाल का निर्माण स्वयं करती है, अपने अन्दर से जाला बनाने का पदार्थ निकालती है एवं उसे इच्छानुसार अपने अन्दर समेट लेती है। उसी प्रकार ब्रह्म इस ब्रह्माण्ड का निर्माण करता है और उसका उपादान कारण भी वही है।

ब्रह्म निराकार, र्निगुण, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक एवं सर्वशक्तिमान है माया के संयोग से वह साकार (ईश्वर) का रूप धारण करता है। यह समस्त स्थूल उसी का साकार रूप है। ब्रह्म स्वयं भी सृष्टि के रूप में अभिव्यक्त हो रहा है।

**ईश्वर और आत्मा–** स्वामी विवेकानन्द जी कहते है कि संसार के सभी स्थूल पदार्थ एवं सूक्ष्म आत्माऐं परमात्मा (ब्रह्मा) के अंश है वे अद्वैतवाद के सिद्धान्त से सहमत है कि सभी आत्माऐं परमात्मा का अंश मात्र है। उसी की भॉति वे भी अनादि और अनन्त है।

**आत्मा और प्रकृति–** आदि शंकरचार्य के समान स्वामी विवेकानन्द भी जीवन का अन्तिम लक्ष्म मुक्ति प्राप्त करना मानते है। अर्थात् इस प्रपंचात्मक जगत तथा आवागमन के चक्र से छुटकारा पाना और आत्मा को परमात्मा में लीन करना है। आत्मा का निर्माण भौतिक तत्वों से नहीं हुआ है। वह एक अविभाज्य ईकाई है। इसलिए अनिवार्यतः और अनन्त होना भी अनिवार्य है।

**जगत–** आदि शंकराचार्च ने वस्तु जगत के ज्ञान को असत्य (परिवर्तनशील, नाशवान) वताया है, किन्तु सूक्ष्य जगत का ज्ञान सत्य (चिरन्तन एवं शाश्वत) है।
विवेकानन्द जी वस्तु जगत एवं सूक्ष्म जगत दोनों को सत्य मानते है। उन्होंने स्पष्ट किया है कि वस्तु जगत भी ब्रह्म द्वारा निर्मित है और बृहमा सत्य है ।

**आत्मानम् विधि–** विवेकानंद जी अपने व्याख्यानों में सव कही बातों और विचारों को तर्क से पुष्टि करने का प्रयास करते थे, उन्होंने कहा था। मेरा आशय वही है जो आज का हर शिक्षक मनुष्य चाहता है। अर्थात लेकिन ज्ञान के आविष्कार को धर्म के क्षेत्र में प्रयुक्त करना, उनका सबसे महान उपदेश भी यही था, कि मानव अपने वास्तविक स्वरूप को समझे।

**शैक्षिक विचार–** स्वामी विवेकानंद ने पुस्तकीय शिक्षा का विरोध किया और यूरोप के अनेक नगरों का भ्रमण करते हुए उन्हें शिक्षा की भौतिक उपलब्धियॉ भी दिखाई दी भारत की निर्धनता एक कारण उन्होंने अशिक्षा को माना है।

**शिक्षा की अवधारणा–** स्वामी जी भारत में ऐसी शिक्षा चाहते थे जिससे व्यक्ति चरित्रवान और आत्मनिर्भर बन सके। स्वामी जी शिक्षा के द्वारा मनुष्य को लौकिक एवं पारलौकिक दोनों जीवनों के लिए तैयार करना चाहते थे। उनका विश्वास था कि जव तक हम भौतिक दृष्टि से सम्पन्न एवं सुखी नहीं होते तव तक ज्ञान, कर्म भक्ति योग में सब कल्पना की वस्तु है। लौकिक दृष्टि से उन्होंने नारा दिया। "हमें ऐसी शिक्षा चाहिए, जिसके द्वार चरित्र का गठन हो, मन का बल बढे। बुद्वि का विकास हो ओर मनुष्य स्वालम्बी बने।

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-9, No.-II, Issues-10 YEAR- Dec -2018

परंतु मनुष्य जीवन का अन्तिम उददेश्य अपने अन्दर छिपी आत्मा की अभिव्यक्ति है।''

**स्वामी विवेकानंद के अनुसार** – ''शिक्षा केवल सूचनाए प्राप्त करना ही नहीं है। अध्यापक बालक के मस्तिष्क में केवल रटी–रटाई सूचनाऐं बलपूर्वक ठूसता है उसे शिक्षा मानना शिक्षा का अनर्थ मात्र है ।

स्वामी जी ने लिखा है कि – ''शिक्षा का अर्थ मात्र सूचनाओं से होता तो पुस्तकारलय विश्व के सबसे बडे एवं सर्वश्रेष्ठ सन्त तथा विश्वकोष ऋषि बन जाते।''

स्वामी विवेकानंद ने शिक्षा के अर्थ को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि ''शिक्षा उस सन्निहित पूर्णता का प्रकाश है जो मनुष्य में पहले से ही विद्यमान है।''

**स्वामी विवेकानंद के अनुसार** –''शिक्षा मनुष्य में पहले विद्यमान दैवी पूर्णता का प्रत्यक्षीकरण है।''

**शिक्षा के उद्देश्य–** स्वामी विवेकानंद जी ने शिक्षा का उददेश्य स्पष्ट करते हुए कहा है कि सभी कथाओं के अभ्यासों का उद्देश्य मनुष्य निर्माण ही है। समस्त अभ्यासों का अन्तिम उद्देश्य/लक्ष्य मनुष्य का विकास करना है। जिस अभ्यास के द्वारा मनुष्य की इच्छा शक्ति का प्रवाह आविष्कार संयमित होकर फलदायी बन सके, उसी का नाम शिक्षा है। स्वामी विवेकानंद के अनुसार शिक्षा के उददेश्य –

1. शारीरिक विकास
2. मानसिक एवं बौद्विक विकास
3. नैतिक एवं चारित्रिक विकास
4. समाज सेवा की भावना का विकास
5. आत्म–विश्वास एवं आत्मत्याग की भावना
6. धार्मिक शिक्षा
7. व्यावसायिक विकास
8. राष्ट्रीय एकता एवं विश्व बन्धुत्व
9. विभिन्नता में एकता की खोज
10. पूर्णत्व को प्राप्त करना

**पाठ्यक्रम–** स्वामी विवेकानन्द के शिक्षा दर्शन एवं शिक्षा उददेष्य तथा अन्य चिन्तन से प्रतीत होता है कि उनका पाठयक्रम भी अतिश्रेष्ठ है यह उतना ही विस्तृत है जितना कि जीवन। उन्होंने जीवन के हर पक्ष को स्पर्श किया। पाठ्यक्रम षिक्षा के उददेश्यों को प्राप्त करने का साधन है। विवेकानंद जी ने पाठ्यक्रम में निम्नलिखित विषयों को आवश्यक बताया है ।

1. स्वामी विवेकानन्द ने शारीरिक विकास हेतु पाढ्रयक्रम खेलकूद व्यायाम और यौगिक क्रियाओं को स्थान दिया है ।
2. मानसिक एवं बौद्विक विकास के लिए उन्होंने भाषा कला संगीत इतिहास भूगोल राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र, गणित और वैज्ञानिक विषयों को महत्वपूर्ण माना है ।
3. भाषा के सम्बन्ध में सामान्य जीवन के लिए मातृभाषा, अपने धर्म और दर्शन के ज्ञान के लिए संस्कृत भाषा, अपने देश को समझने के लिए प्रादेशिक भाषाओं का ज्ञान ओर विज्ञान तथा तकनीकी की शिक्षा के लिए अंग्रजी भाषा का ज्ञान आवष्यक बताया है। इन सकका पाठ्यक्रम में स्थान होना चाहिए ।
4. स्वामी विवेकानन्द कला को जीवन का अभिन्न अंग मानते थे, इसलिए इसके अन्तर्गत चित्रकला, वास्तुकला, संगीत, नृत्य और अभिनय (नाटक) सभी को पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने के पक्षधर थे।
5. इतिहास के अन्तर्गत वे भारत और यूरोप दोनों के इतिहास को पढाने के पक्ष में थे। क्यों कि भारत के इतिहास के अध्ययन से बालकों में देश प्रेम का विकास होगा। और यूरोप के इतिहास के अध्ययन से भौतिक सम्पन्नता प्राप्त करने हेतु कर्मशील बनने की प्रेरणा प्राप्त करेंगे।
6. राजनीतिशास्त्र और अर्थशास्त्र को इसलिए पढाया जाना चाहिए कि क्यों कि इन दोनों विषयों के अध्ययन से क्रमशः राजनीति चेतना जागृत होगी और आर्थिक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने को प्रयत्नशील होंगे।
7. स्वामी विवेकानंद ने समाज सेवा को प्रमुख स्थान दिया। अतः इस विषय का अध्ययन प्रत्येक स्तर पर अनिवार्य होना चहिए।
8. बालकों के नैतिक एवं चारित्रिक विकास के लिए धर्म एवं नीतिशास्त्र को अनिवार्य रूप से पढाया जाना चहिए।
9. व्यवसायिक शिक्षा हेतु मातृभाशा, अंग्रेजी भाषा, भौतिक विज्ञान, कृषि विज्ञान, तकनीकी और औद्योगिक शिक्षा पर बल दिया।
10. आध्यात्मिक विकास के लिए साहित्य, धर्म, दर्शन एवं नीतिशास्त्र और भजन–कीर्तन, सत्संग और ध्यान की कियाओं को पाठ्यक्रम में प्रमुख स्थान दिया है।

**शिक्षण विधियॉं–** स्वामी विवेकानंद स्वयं आत्मज्ञानी एवं आत्म दृष्टा थे। उन्होंने भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों प्रकार के ज्ञान की आवश्यकता बतायी है। उन्होंने भौतिक ज्ञान की प्राप्ति के लिए प्रत्यक्ष, अनुकरण, व्याख्यान, निर्देशन, विचार–विमर्श और प्रयोग विधियों का समर्थन किया है। सबसे उत्तम विधि योग (एकाग्रता) है। स्वामी विवेकानंद ने स्वयं देश–विदेश में वेदान्त की शिक्षा दी और ध्यान किया में प्रशिक्षित किया। उन्होंने प्रत्येक विधि का विशिष्ट रूप में प्रयोग किया। अतः यहॉं उनके द्वारा बतायी– शिक्षण विधियॉं निम्न प्रकार हैं–

1. अनुकरण विधि :
2. व्याख्यान विधि :
3. तर्क एवं विचार विमर्श विधि
4. निर्देशन ओर परामर्श विधि

5. प्रदर्शन एवं प्रयोग विधि
6. स्वाध्याय विधि
7. योग विधि

**शिक्षक एवं विद्यार्थी–** स्वामी जी के अनुसार शिक्षक का चरित्र अग्नि के समान प्रकाशवान होना चाहिए। उसे उच्चतम आदर्शों की सजीव मूर्ति होना चाहिए। उसे ज्ञान के दान के लिए सदा तत्पर रहना चाहिए।

**विद्यालय–** वैसे तो स्वामी जी प्राचीन गुरूकुल प्रणाली के समर्थक थे किन्तु वे जानते थे कि वर्तमान में इस प्रकार के विद्यालय एकान्त में, कोलाहल से दूर, प्रकृति की सुरम्य गोद में स्थापित नहीं किये जा सकते। अतः उन्होंने विद्यालयों के शुद्व वातावरण पर बल दिया और कहा कि उनमें व्यायाम, खेलकूद, अध्ययन, अध्यापन की सुव्यवस्था होनी चाहिए। इसके साथ ही समाज सेवा, भजन कीर्तन एवं ध्यान की आवश्यक कियायें भी सम्पादित होनी चाहिए ।

**अनुशासन–** स्वामी जी ने आध्यात्मिक पक्ष पर सर्वाधिक बल दिया है इनके अनुसार अनुशासन का अर्थ अपने व्यवहार में आत्मा द्वारा निर्दिष्ट होना है। उन्होंने बताया कि जब हम प्रकृति के अधीन स्व से प्रेरित होकर कर्म करते हैं। तो अपने को अनुशासित नहीं कर सकते हैं। वास्तव में यह भी मध्य मार्गीय अनुशासन है वास्तविक अनुशासन तो आत्म अनुशासन है। क्यों कि इस स्थिति में हम आत्मा द्वारा प्रेरित होकर कार्य करते हैं, अतः मुक्तयात्मक अनुशासन का अन्ति रूप आत्मानुषासन ही है। अतः विवेकानन्द बालक की सद् प्रवृतित्तयों के विकास द्वारा विनयी एवं अनुशासित बनाने के पक्ष में थे ।

**नारी शिक्षा–** नारी अवनति का एक प्रमुख कारण स्त्रियों की अशिक्षा है। लडकों तथा लडकियों दोनों को ही पुस्तकीय शिक्षा के अलावा चरित्र की शिक्षा भी प्राप्त करनी चाहिए। जिससे समाज में सचादार का वातावरण सदैव ही बना रहे। इससे उनके मानसिक बल की बृद्वि होकर बौद्विक विकास होता है। तथा उन्हें अपने दावों पर खडे होने की भी शक्ति मिलती है

**जन शिक्षा–** स्वामी विवेकानन्द परतन्त्र भारत में देश की अशिक्षित भूखी निर्धन जनता को देखकर बडे दुःखी थे। करोडो मनुष्यों को अज्ञान, अंधविश्वास और घोर दरिद्रता में पलते हुए देखकर उनका हदय द्रवित हो उठता था। वे कहते थे– "उन्हें विचार दो, सूचनाओं का संग्रह वह स्वयं कर लेंगे।"

**व्यावसायिक शिक्षा–** स्वामी विवेकानन्द ने अपने देश की नग्न तस्वीर देखी थी और साथ ही पाश्चात्य देशों का वैभव भी देखा था । उन्होंने अनुभव किया कि अपने देश की निर्धनता के दो कारण है 1. साामान्य शिक्षा का अभाव 2. विशिष्ट एवं व्यावसायिक शिक्षा का अभाव। उन्होंने प्रथम नारा जनशिक्षा का दिया और दूसरा विशिष्ट एवं व्यावसायिक शिक्षाा का दिया। व्यावसायिक शिक्षा से स्वामी जी का तात्पर्य केवल कुटीर उद्योगों एवं सामान्य शिल्पों की शिक्षा से नहीं था अपितु पाश्चात्य देशों की विज्ञान और तकनीकी शिक्षा से था। उनका मानना था कि देश के लिए, देश में ही डाक्टर, इंन्जीनियर और वकील आदि तैयार हो । प्रशासक तैयार किये जाऐ । इस प्रकार से उनका व्यावसायिक शिक्षा के सन्दर्भ में दृष्टिकोण बहुत व्यापक एवं व्यावहारिक था।

**धर्म शिक्षा–** स्वामी विवेकानन्द धार्मिक शिक्षा के प्रवल समर्थक थे। परन्तु धार्मिक शिक्षा के विषय में उनके विचार संकीर्ण नहीं है। वे धर्म को किसी सम्प्रदाय की सीमा से बॉधना नहीं चाहते थे। धर्म उनके अनुसार– जीवन के शाश्वत मूल्यों का उदघोषक है। वे स्वयं अपने गुरूदेव श्री रामकृष्ण परमहंश की इस बात का प्रचार करते थे। संसार के सभी धर्म एक है। सभी एक ही उददेश्य के भिन्न मार्ग हैं। धर्म के सम्बन्ध में उन्होंने शिकागो विश्व धर्म सम्मेलन में कहा था कि "मुझे गर्व है कि मैं हिन्दू धर्माबलम्बी हूँ जो सहिष्णुता और विश्व–बन्धुत्व की शिक्षा देता है।" लोगों का यह सोचना व्यर्थ है संसार में कभी केवल एक ही धर्म होगा ।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. स्वामी विवेकानंद : विवेकानदं संचयन प्रका0 – श्री रामकृष्ण आश्रम नागपुर, महाराष्ट्र।
2. मजूदमदार, आर0सी0 : स्वामी विवेकानंद प्रका0 – सेन्चुरी मेमोरियल वाल्यूम 1963.
3. डॉ0 मजूमदार, सत्येन्द्रनाथ : विवेकानन्द चरित षष्ठ संस्करण प्रका0 श्री कृष्ण आश्रम, नागपुर महाराष्ट्र।
4. डॉ0 वर्मा, रामनाथ : समकालीन भारतीय दर्शन प्रका0 केदारनाथ रामनाथ 1976.77.
5. डॉ0 शर्मा, रामनाथ : पाश्चात्य दर्शन का समस्यात्मक विवेचन प्रका0 केदारनाथ रामनाथ शर्मा मरेठ 1974.75.
6. आचार्य गर्ग, बी0आर0 : भारत में शैक्षिक क्रान्ति प्रका0– भारत विद्याविहार अम्बाला छावनी हरियाणा।
7. रोमा रोला : विवेकानंद का जीवन और सार्वभौमिक सिद्वांत प्रका0 अद्वैत आश्रम, अल्मोडा 1960 उत्तराखंण्ड।

*****